International Journal of Hindi Research
www.hindijournal.com
ISSN: 2455-2232
Received: 22-06-2026, Accepted: 22-07-2026, Published: 06-08-2026
Volume 12, Issue 3, 2026, Page No. 70-73

कुंतला कुमारी साबत के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना और गांधीवादी दृष्टि

डॉ. रूपधर गोमांगो
सहायक प्राध्यापक, हिन्दी विभाग, राजेन्द्र विश्वविद्यालय, ओडिशा, भारत
DOI: https://doi.org/10.66856/ijhr.2026.12.3.12207

सारांश
भारतीय स्वाधीनता आंदोलन के काल में साहित्य राष्ट्रीय जागरण का सशक्त माध्यम बनकर उभरा। इस युग के अनेक साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से स्वतंत्रता, स्वदेशी, राष्ट्रीय एकता, सांस्कृतिक अस्मिता और सामाजिक पुनर्जागरण की चेतना का प्रसार किया। ओड़िया साहित्य की सुप्रसिद्ध कवयित्री, चिकित्सक और समाज–सुधारक कुंतला कुमारी साबत इसी राष्ट्रीय नवजागरण की प्रतिनिधि साहित्यकार हैं। यद्यपि उनकी ख्याति मुख्यतः ओड़िया साहित्य के कारण है, तथापि उनका हिन्दी काव्य भी राष्ट्रीय चेतना, गांधीवादी विचारधारा, राष्ट्रभाषा हिन्दी, भारतीय संस्कृति तथा नारी–जागरण के सशक्त स्वर का प्रतिनिधित्व करता है।
प्रस्तुत शोध–लेख में उनकी हिन्दी कविताओं का विश्लेषण उनके जीवन, साहित्यिक विकास और सामाजिक सक्रियता के आलोक में किया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि उनकी हिन्दी कविताएँ केवल राष्ट्रभक्ति के भावात्मक गीत नहीं हैं, बल्कि भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की वैचारिक एवं सांस्कृतिक अभिव्यक्ति भी हैं। इस शोध में यह प्रतिपादित किया गया है कि कुंतला कुमारी का हिन्दी काव्य भारतीय राष्ट्रीयता को भाषा, संस्कृति, स्त्री–चेतना और गांधीवादी जीवन–दर्शन से जोड़ते हुए एक व्यापक मानवीय दृष्टि प्रस्तुत करता है।

मूल शब्दः कुंतला कुमारी साबत, राष्ट्रीय चेतना, गांधीवाद, राष्ट्रभाषा हिन्दी, सांस्कृतिक राष्ट्रवाद, स्त्री–जागरण

उन्नीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध और बीसवीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध का भारतीय साहित्य राष्ट्रीय चेतना के विकास का साक्षी है। अंग्रेज़ी शासन के विरुद्ध संघर्ष ने साहित्य को केवल सौन्दर्याभिव्यक्ति का माध्यम न रहने देकर सामाजिक और राष्ट्रीय परिवर्तन का उपकरण बना दिया। इस काल के साहित्यकारों ने अपने लेखन द्वारा जनता में स्वतंत्रता, स्वदेशी, राष्ट्रीय एकता, सामाजिक सुधार तथा सांस्कृतिक स्वाभिमान की भावना का संचार किया। हिन्दी साहित्य में भारतेंदु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्रा कुमारी चौहान और रामधारी सिंह श्दिनकरश जैसे रचनाकारों ने राष्ट्रीय चेतना को स्वर दिया; वहीं भारतीय भाषाओं के अनेक साहित्यकारों ने भी इसी दिशा में उल्लेखनीय योगदान दिया।
आधुनिक ओड़िया साहित्य की अग्रणी कवयित्री कुंतला कुमारी साबत इसी परंपरा की महत्त्वपूर्ण प्रतिनिधि हैं। सामान्यतः उन्हें ओड़िया साहित्यकार के रूप में स्मरण किया जाता है, किंतु उनका हिन्दी काव्य भी समान रूप से महत्त्वपूर्ण है। उनकी हिन्दी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, गांधीवादी दर्शन, राष्ट्रभाषा हिन्दी, भारतीय संस्कृति तथा स्त्री–शक्ति का ऐसा समन्वित रूप मिलता है, जो उन्हें भारतीय राष्ट्रीय साहित्य की व्यापक धारा से जोड़ता है। उनकी हिन्दी रचनाएँ इस बात का प्रमाण हैं कि भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन भाषाई सीमाओं से परे एक साझा सांस्कृतिक आंदोलन था।

कुंतला कुमारी साबतः व्यक्तित्व एवं कृतित्व (1901–1938)

कुंतला कुमारी साबत आधुनिक ओड़िया साहित्य की उन विरल प्रतिभाओं में हैं जिन्होंने साहित्य, समाज–सेवा, चिकित्सा और राष्ट्रीय आंदोलन चारों क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। वे केवल कवयित्री नहीं थीं, बल्कि एक शिक्षित चिकित्सक, निर्भीक समाज–सुधारक और राष्ट्रवादी विचारक भी थीं। उनका साहित्य उनके जीवन–संघर्ष और सामाजिक प्रतिबद्धता का स्वाभाविक विस्तार है।
उनकी साहित्यिक प्रतिभा का विकास बाल्यकाल से ही प्रारंभ हो गया था। रेवेन्सॉ बालिका विद्यालय में अध्ययन के दौरान उन्होंने अपनी पहली कविता लिखी। बाद में साहित्यकार कैलाशचन्द्र के मार्गदर्शन में उनकी रचनात्मक प्रतिभा को दिशा मिली। "उनकी पहली प्रकाशित कविता श्ताराप्रतिश उत्कल साहित्य पत्रिका में प्रकाशित हुई, जिसने उन्हें ओड़िया साहित्य–जगत में पहचान दिलाई। इसके पश्चात 'शेफालिप्रति', 'कमलप्रति' और 'पूजा' जैसी कवितियों ने उनकी प्रतिष्ठा को और सुदृढ़ किया।"[1]
उनकी प्रारम्भिक कविताओं में आध्यात्मिकता और रहस्यवादी संवेदना का स्वर मिलता है। 'अंजलि' काव्य–संग्रह की अनेक कविताएँ ईश्वर, आत्मा और मानवीय चेतना के संबंधों की खोज करती हैं। आलोचकों ने इन रचनाओं में भारतीय आध्यात्मिक परंपरा और आत्मानुभूति की गहन अभिव्यक्ति देखी है।
समय के साथ उनका साहित्य आध्यात्मिक अनुभव से आगे बढ़कर सामाजिक और राष्ट्रीय प्रश्नों की ओर उन्मुख हुआ। वे महिला–शिक्षा, सामाजिक सुधार और राष्ट्रीय आंदोलन से सक्रिय रूप से जुड़ीं। उन्होंने महिला सम्मेलनों में भाग लेकर स्त्री–शिक्षा और स्त्री–सशक्तिकरण की वकालत की। उनका स्पष्ट मत था कि भारत का पुनर्निर्माण स्त्रियों की सक्रिय भागीदारी के बिना संभव नहीं है।
राष्ट्रीय आंदोलन के प्रति उनकी प्रतिबद्धता केवल साहित्य तक सीमित नहीं थी। उन्होंने विभिन्न राष्ट्रीय सभाओं में भाग लिया, सामाजिक जागरण के लिए भाषण दिए और राष्ट्रीय अस्मिता से जुड़े प्रश्नों को उठाया। उन्हें 'उत्कलभारती' की उपाधि से सम्मानित किया गया, जो उनके साहित्यिक और सामाजिक योगदान का प्रमाण है।
कुंतला कुमारी की साहित्यिक उपलब्धियाँ अत्यंत व्यापक हैं। उन्होंने कविता, उपन्यास, निबंध तथा सामाजिक लेखन के क्षेत्र में उल्लेखनीय कार्य किया। उनके प्रमुख ओड़िया काव्य–संग्रहों में "'अंजलि' (1923), 'उल्लास' (1924), 'अर्चना' (1927), 'आह्वान' (1930), 'प्रेम चिंतामणि' (1930) और 'ओड़ियाओं का क्रंदन' (1936) उल्लेखनीय हैं।"[2] इसके अतिरिक्त उन्होंने अनेक उपन्यासों की भी रचना की। विशेष उल्लेखनीय तथ्य यह है कि उन्होंने हिन्दी में भी काव्य–रचना की, जिनमें 'वरमाला' सहित अनेक राष्ट्रीय कविताएँ सम्मिलित हैं।

उनका हिन्दी लेखन इस तथ्य का प्रमाण है कि वे भारतीय राष्ट्रवाद को किसी एक भाषा तक सीमित नहीं मानती थीं। उनकी हिन्दी कविताओं में राष्ट्रीय चेतना, गांधीवादी विचार, राष्ट्रभाषा हिन्दी के प्रति सम्मान और भारतीय सांस्कृतिक एकता की भावना अत्यंत प्रभावशाली रूप में व्यक्त हुई है। इस दृष्टि से उनका हिन्दी काव्य भारतीय राष्ट्रीय साहित्य की बहुभाषिक परंपरा का महत्त्वपूर्ण अध्याय है।

कुंतला कुमारी के हिन्दी काव्य में राष्ट्रीय चेतना

कुंतला कुमारी साबत के हिन्दी काव्य का मूल स्वर राष्ट्रीय चेतना है। उनके लिए राष्ट्र केवल राजनीतिक सत्ता का नाम नहीं, बल्कि सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक मूल्यों का समन्वित स्वरूप है। उनकी राष्ट्रीय भावना भावुक राष्ट्रभक्ति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि स्वतंत्रता, सामाजिक समरसता, आत्मनिर्भरता और सांस्कृतिक स्वाभिमान की व्यापक अवधारणा से जुड़ती है। यही कारण है कि उनके हिन्दी काव्य में स्वतंत्रता आंदोलन के प्रमुख प्रतीक चरखा, तिरंगा, भारतमाता, राष्ट्रभाषा और राष्ट्रीय नेता बार–बार उपस्थित होते हैं।

यह राष्ट्रीय दृष्टि उनके व्यक्तिगत जीवन से भी जुड़ी हुई थी। वे स्वयं राष्ट्रीय आंदोलनों में सक्रिय रहीं, महिला संगठनों का नेतृत्व किया और सामाजिक चेतना के प्रसार को साहित्य का उद्देश्य माना। इस कारण उनकी कविताओं में व्यक्त राष्ट्रवाद केवल कल्पना नहीं, बल्कि उनके जीवनानुभवों की स्वाभाविक अभिव्यक्ति है।

उनकी कविता 'वरमाला' में पंडित जवाहरलाल नेहरू का चित्रण राष्ट्रीय नेतृत्व के प्रतीक के रूप में हुआ है–

"आज राष्ट्रपति, वीर महामति,
मोतीलाल सुत जवाहरलाल।
नवीन निर्मल तिलक उज्ज्वलित,
चिर ज्योतिर्मय भारत का भाल।"[3]

यहाँ कवयित्री ने नेहरू को केवल राजनीतिक व्यक्तित्व के रूप में नहीं, बल्कि स्वतंत्र भारत की आशा, प्रगति और आधुनिक चेतना के प्रतीक के रूप में देखा है। 'भारत का भाल' रूपक उनके प्रति राष्ट्रीय सम्मान का सूचक है।

इसी प्रकार श्प्यारा हिन्दुस्तानश कविता में भारतभूमि के प्रति उनका गहरा आत्मीय लगाव दिखाई देता है–

"धन्य जन्म माना अपने प्यारे हिन्दुस्तान में,
मरना मैं चाहती हूँ इस आन और शान में।"[4]

यहाँ मातृभूमि के प्रति समर्पण का भाव केवल भावनात्मक नहीं है; यह राष्ट्रीय स्वाभिमान और आत्मोत्सर्ग की भावना का उद्घोष है। कवयित्री भारत की नदियों, पर्वतों और सांस्कृतिक परंपराओं को राष्ट्रीय अस्मिता का आधार मानती हैं। इतिहास लेखक बिपिन चन्द्र तत्कालीन परिस्थिति को अपने इतिहास ग्रन्थ में इस प्रकार जिक्र किये हैं "विदेशी शासन का अस्तित्व ही एकता का कारण बन गया, हालांकि यह शासन सामाजिक वर्ग, जाति, धर्म या क्षेत्र का भेद किए बिना पूरी भारतीय जनता का दमन करता था। पूरे देश के लोगों ने देखा कि वे एक ही शत्रु अर्थात ब्रिटिश शासन, के हाथों पीड़ित थे। एक तरफ तो यह भारतीय राष्ट्रवाद के उदय का एक प्रमुख कारण बन गया और दूसरी तरफ साम्राज्यवाद–विरोधी संघर्ष तथा उस संघर्ष के दौरान उपजी एकजुटता की भावना ने भारतीय राष्ट्र के निर्माण में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।"[5]

इस प्रकार उनकी राष्ट्रीय चेतना में सांस्कृतिक गौरव, ऐतिहासिक स्मृति और स्वतंत्रता की आकांक्षा का समन्वय दिखाई देता है।

गांधीवादी दृष्टि और स्वदेशी की अवधारणा

कुंतला कुमारी साबत के हिन्दी काव्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव है। महात्मा गांधी के नेतृत्व में स्वदेशी, सत्य, अहिंसा और आत्मनिर्भरता जिस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन के मूल तत्व बने, उसी प्रकार उनकी कविताओं में भी ये मूल्य केन्द्रीय स्थान प्राप्त करते हैं।

'चरखा–धारी' कविता में वे गांधीजी को राष्ट्र का पथप्रदर्शक मानते हुए लिखती हैं–

"चरखा धारी! भारत नैया के पतवारी।
अहिंसा मंत्र के महान पुजारी।"[6]

इन पंक्तियों में चरखा केवल आर्थिक उपकरण नहीं है। वह भारतीय आत्मनिर्भरता, श्रम–सम्मान, स्वदेशी और औपनिवेशिक आर्थिक शोषण के प्रतिरोध का प्रतीक बन जाता है। "भारत नैया के पतवारी" कहकर कवयित्री गांधीजी को राष्ट्र के नैतिक नेतृत्व का प्रतिनिधि स्वीकार करती हैं।

गांधीवादी प्रभाव का अधिक सशक्त रूप 'मंत्र से स्वतंत्रता का गूँजता स्वदेश हो' कविता में मिलता है–

"भारत स्वाधीनता का यंत्र श्चरखाश उसका नाम।
चरखा का सूत, मोटा खादी हमारा वेश हो,
चरखा मंत्र से स्वतंत्रता का गूँजता स्वदेश हो।"[7]

यहाँ चरखा राष्ट्रीय पुनर्जागरण का सांस्कृतिक प्रतीक बन जाता है। कवयित्री का विश्वास है कि विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार और स्वदेशी उद्योगों के विकास के बिना राजनीतिक स्वतंत्रता अधूरी रहेगी।

यह उल्लेखनीय है कि कुंतला कुमारी का यह दृष्टिकोण केवल काव्यात्मक नहीं था। उनके सामाजिक जीवन में भी स्वावलम्बन, सेवा और जनजागरण प्रमुख मूल्य रहे।

राष्ट्रीय एकता और समन्वयवादी राष्ट्रवाद

कुंतला कुमारी साबत का राष्ट्रवाद किसी जाति, धर्म या भाषा तक सीमित नहीं है। वे भारतीय समाज की बहुलतावादी संरचना को राष्ट्र की शक्ति मानती हैं। उनकी दृष्टि में भारत की विविधता ही उसकी सबसे बड़ी पहचान है। यही विचार गाँधीजी की हिन्द–स्वराज में दिखलाई पड़ती है " हिन्दू अगर यह सोचें कि सारा हिंदुस्तान हिंदुओं से ही भरा हो तो यह उनका स्वप्न मात्र है। मुसलमान यह माने कि केवल मुसलमान इस देश में बसें तो इसे भी दिन का सपना ही समझना होगा। हिंदू, मुसलमान, पारसी ईसाई जो कोई भी इस देश को अपना देश मानकर यहां बस गये हैं वे सब एक देशी, एक मुल्की हैं, देश के नाते भाई–भाई हैं और अपने स्वार्थ, अपने हित की खातिर भी उन्हें एक होकर रहना होगा। दुनिया में कहीं भी एकराष्ट्र का अर्थ एक धर्म नहीं माना गया, हिंदुस्तान में भी कभी नहीं रहा।"[8]

'तिरंगा झण्डा' कविता में वे लिखती हैं–

"आओ भाई हिन्दू–मुसलमान,
होकर इकट्ठे गले लगकर,
करो अब आज़ाद प्यारा हिन्दुस्तान।"[9]

इसके बाद वे मराठा, बंगाली, जाट, सिख, राजपूत, पारसी और पठान आदि का उल्लेख करते हुए सम्पूर्ण भारत को एक परिवार के रूप में प्रस्तुत करती हैं।

यह दृष्टिकोण गांधीजी की सर्वधर्म समभाव की अवधारणा से मेल खाता है। कुंतला कुमारी के लिए स्वतंत्रता तभी सार्थक है जब वह सामाजिक समरसता और धार्मिक सौहार्द पर आधारित हो।

राष्ट्रभाषा हिन्दी: राष्ट्रीय एकता का माध्यम

कुंतला कुमारी साबत का हिन्दी प्रेम केवल साहित्यिक रुचि का परिणाम नहीं था। एक ओड़िया भाषी साहित्यकार होने के बावजूद उन्होंने हिन्दी को राष्ट्रीय एकता की भाषा के रूप में स्वीकार किया। यह तथ्य उनके व्यापक भारतीय दृष्टिकोण को प्रमाणित करता है।

'राष्ट्रभाषा' कविता में वे लिखती हैं–

"प्रणाम पद–प्रान्त में तव, राष्ट्रभाषा जननी।
शत कलित कला शुभ भाव विभूषित, ललित कोमल वचनी।"[10]

यहाँ हिन्दी को 'जननी' कहकर संबोधित करना उसके प्रति श्रद्धा और आत्मीयता का परिचायक है। आगे वे पंजाब, बंगाल, उत्कल, बिहार, महाराष्ट्र, कश्मीर, आन्ध्र और तमिल प्रदेश का उल्लेख करते हुए हिन्दी को सम्पूर्ण भारत की संपर्क–भाषा के रूप में स्थापित करती हैं।

ध्यान देने योग्य तथ्य यह है कि स्वयं बहुभाषी साहित्यकार होने के कारण उनका हिन्दी–समर्थन अन्य भारतीय भाषाओं के विरोध पर आधारित नहीं है। वे हिन्दी को राष्ट्रीय संवाद की भाषा मानती हैं, जबकि क्षेत्रीय भाषाओं के सांस्कृतिक महत्त्व को भी स्वीकार करती हैं। यही उनकी भाषाई दृष्टि को उदार और समावेशी बनाता है।

सांस्कृतिक राष्ट्रवाद और भारतमाता की अवधारणा

कुंतला कुमारी साबत के राष्ट्रवाद का आधार भारतीय संस्कृति है। वे भारत को केवल राजनीतिक इकाई नहीं मानतीं, बल्कि उसे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं से निर्मित जीवंत राष्ट्र के रूप में देखती हैं।

'भारतमाता' कविता में वे लिखती हैं–

"शहीदों के खून में सन जावेगी,
दुनिया का सरताज बन जावेगी।"[11]

यहाँ भारतमाता शहीदों के बलिदान से गौरवान्वित होती है। यह राष्ट्रवाद त्याग, संघर्ष और बलिदान की भावना पर आधारित है। 'भारतमाता' का मतलब क्या है, इस प्रश्न के जवाब में नेहरु ने अपनी पुस्तिक 'द डिस्कवरी ऑफ़ इंडिया' में इस प्रकार प्रस्तुत किया है "भारत माता की जय !" से मतलब हुआ इन लोगों की जय का। मैं उनसे कहता कि तुम इस भारत माता के अंश हो, एक तरह से तुम भी भारत माता हो, और जैसे–जैसे ये विचार उनके मन में बैठते, उनकी आँखों में चमक आ जाती, इस तरह, मानो उन्होंने कोई बड़ी खोज कर ली हो।"[12]

इसी प्रकार 'भारत–भूमि' कविता में भारत की सांस्कृतिक समृद्धि का चित्रण करते हुए वे गंगा, नर्मदा, ब्रह्मपुत्र, हिमालय तथा भारतीय ज्ञान–परंपरा का स्मरण करती हैं।

यह सांस्कृतिक दृष्टि किसी संकीर्ण राष्ट्रवाद का समर्थन नहीं करती, बल्कि भारतीय सभ्यता की बहुलतावादी और समन्वयकारी परंपरा को प्रतिष्ठित करती है।

भारतीय नारी: आदर्श और जागरण

कुंतला कुमारी साबत स्वयं स्त्री–शिक्षा और महिला–जागरण की समर्थक थीं। उन्होंने अनेक महिला सम्मेलनों में स्त्रियों की सामाजिक भागीदारी पर बल दिया। उनका मत था कि स्त्री–शक्ति के जागरण के बिना राष्ट्र का पुनर्निर्माण संभव नहीं है। तत्कालीन उत्कल प्रदेश की अनेक नारी नेत्री आज़ादी की लड़ाई में सक्रिय सहभागिता करती थीं। सरला देवी अपने एक लेख में इस प्रसंग उल्लेख किया है "ओडिशा का कोई भी गाँव, कस्बा या जिला ऐसा नहीं था, जहाँ की महिलाओं ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में सक्रिय भागीदारी न की हो। सुभद्रा महताब, रमादेवी, मालती चौधरी और मैं गाँव–गाँव जाकर महिलाओं को संगठित करती थीं तथा उन्हें महात्मा गांधी के स्वराज्य आंदोलन से जोड़ने का कार्य करती थीं। रमादेवी कटक जिले में, मैं गंजाम जिले में, सुभद्रा देवी, जाह्नवी देवी और कोकिला देवी बालेश्वर जिले में तथा सुनामणि देवी पुरी जिले में आंदोलन के लिए स्वयंसेवकों और स्वतंत्रता सेनानियों को संगठित करने तथा जन–जागरण का दायित्व निभा रही थीं।"[13]

इसी विचार का काव्यात्मक रूप कुंतला जी की 'भारत–नारी' कविता में मिलता है–

"पतिव्रता सती सावित्री शुभ,
शक्तिमयी वर नारी।"[14]

पहली दृष्टि में यह कविता पारंपरिक आदर्श नारी का चित्र प्रस्तुत करती प्रतीत होती है, किन्तु उनके सामाजिक जीवन और सार्वजनिक वक्तव्यों के आलोक में इसका अर्थ अधिक व्यापक हो जाता है। यहाँ भारतीय नारी केवल गृहस्थ जीवन की मर्यादा तक सीमित नहीं है; वह राष्ट्रनिर्माण की सक्रिय सहभागी, नैतिक शक्ति और सामाजिक परिवर्तन की वाहक भी है।

अतः कुंतला कुमारी की नारी–दृष्टि परंपरा और प्रगतिशीलता का संतुलित समन्वय प्रस्तुत करती है।

काव्य–शिल्प और भाषा–सौन्दर्य

कुंतला कुमारी साबत के हिन्दी काव्य की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता उसकी सहज अभिव्यक्ति और उद्देश्यपरकता है। उनकी कविताओं का मूल उद्देश्य राष्ट्रीय चेतना का प्रसार, जनसामान्य में स्वाधीनता की भावना जागृत करना तथा भारतीय संस्कृति के प्रति गौरवबोध उत्पन्न करना है। इसलिए उनकी भाषा कृत्रिम अलंकरण से मुक्त होकर सरल, प्रवाहपूर्ण तथा प्रभावोत्पादक बन गई है।

उनकी भाषा मुख्यतः खड़ी बोली हिन्दी है, किन्तु उसमें संस्कृत–तत्सम शब्दों की पर्याप्त उपस्थिति मिलती है। 'राष्ट्रभाषा', 'भारतमाता', 'स्वाधीनता', 'अहिंसा', 'त्याग', 'बलिदान', 'संस्कृति आदि शब्द उनके काव्य को ओज, गरिमा और वैचारिक दृढ़ता प्रदान करते हैं। साथ ही, लोक–प्रचलित शब्दों के प्रयोग से उनकी कविताएँ जनभाषा के निकट भी बनी रहती हैं।

काव्य–शिल्प की दृष्टि से निम्न विशेषताएँ उल्लेखनीय हैं–

(क) प्रतीकात्मकता

चरखा, तिरंगा, भारतमाता, गंगा, हिमालय, खादी, राष्ट्रभाषा और सावित्री जैसे प्रतीक केवल वस्तुगत संकेत नहीं हैं, बल्कि राष्ट्रीय जीवन–मूल्यों के प्रतिनिधि हैं। उदाहरणतः चरखा स्वदेशी और आत्मनिर्भरता का, जबकि तिरंगा राष्ट्रीय एकता का प्रतीक बनकर उभरता है।

(ख) ओजगुण

राष्ट्रीय कविता होने के कारण उनके काव्य में ओजगुण की प्रधानता है। कविता पाठक के भीतर उत्साह, आत्मविश्वास और राष्ट्रप्रेम का संचार करती है। यह ओज भाषिक आक्रामकता से नहीं, बल्कि नैतिक दृढ़ता से उत्पन्न होता है।

(ग) गीतात्मकता

उनकी अधिकांश कविताएँ गेय हैं। सरल छन्द, लयात्मकता और भावों की स्पष्टता के कारण वे जनसभा और राष्ट्रीय आंदोलनों में गाए जाने योग्य प्रतीत होती हैं।

(घ) अलंकार–योजना

अनुप्रास, पुनरुक्ति, रूपक तथा मानवीकरण जैसे अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग उनकी कविताओं में मिलता है। उदाहरण के लिए "भारत का भाल", "राष्ट्रभाषा जननी", "भारत नैया के पतवारी" आदि रूपक काव्य को प्रभावशाली बनाते हैं।

(ङ) सांस्कृतिक बिंब

भारतीय नदियाँ, पर्वत, ऋषि–परम्परा, त्याग, तप, बलिदान तथा मातृभूमि के सांस्कृतिक बिंब उनकी कविताओं को भारतीय जीवन–दृष्टि से जोड़ते हैं।

स्पष्ट है कि कुंतला कुमारी के काव्य में शिल्प, भाषा और विचार का संतुलित समन्वय मिलता है।

मूल्यांकन व निष्कर्ष

कुंतला कुमारी साबत के हिन्दी काव्य का महत्त्व केवल इस कारण नहीं है कि उन्होंने हिन्दी में कविताएँ लिखीं, बल्कि इसलिए भी है कि उन्होंने भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन की वैचारिक चेतना को बहुभाषिक स्वर प्रदान किया। एक ओड़िया साहित्यकार होकर हिन्दी में राष्ट्रीय कविता लिखना उनकी व्यापक भारतीय दृष्टि का प्रमाण है।

उनकी कविताओं में गांधीवादी विचारधारा का प्रभाव अत्यंत स्पष्ट है। चरखा, खादी, अहिंसा और स्वदेशी उनके लिए केवल राजनीतिक कार्यक्रम नहीं, बल्कि राष्ट्रीय चरित्र–निर्माण के साधन हैं। इस प्रकार उनका काव्य गांधीवादी दर्शन का काव्यात्मक रूपांतरण प्रस्तुत करता है।

राष्ट्रीय चेतना के साथ–साथ उनकी रचनाओं में सांस्कृतिक समन्वय की भावना भी मिलती है। वे भारत की विविध भाषाओं, धर्मों और समुदायों को राष्ट्र की सामूहिक शक्ति मानती हैं। इस कारण उनका राष्ट्रवाद समावेशी है, न कि संकीर्ण या बहिष्कारी।

स्त्री–विमर्श की दृष्टि से उनका साहित्य विशेष उल्लेखनीय है। उनकी कविता 'भारत–नारी' भारतीय स्त्री के आदर्श रूप को प्रस्तुत करती है, जबकि उनके सार्वजनिक भाषण स्त्री–शिक्षा, आत्मनिर्भरता और सामाजिक सहभागिता का समर्थन करते हैं। इस प्रकार उनके व्यक्तित्व और काव्य के बीच गहरा वैचारिक सामंजस्य दिखाई देता है।

फिर भी आलोचनात्मक दृष्टि से कुछ सीमाएँ भी रेखांकित की जा सकती हैं–

कई कविताओं में आदर्शवाद की प्रधानता के कारण तत्कालीन सामाजिक–आर्थिक यथार्थ का विस्तृत चित्रण नहीं मिलता। राष्ट्रवाद के उत्साह में वर्गीय और आर्थिक विषमताओं पर अपेक्षाकृत कम ध्यान दिया गया है। नारी का चित्रण कई स्थानों पर पारंपरिक आदर्शों से प्रभावित दिखाई देता है, यद्यपि उनके सामाजिक विचार इससे अधिक प्रगतिशील थे।

इन सीमाओं के बावजूद उनकी कविताएँ राष्ट्रीय साहित्य की महत्त्वपूर्ण धरोहर हैं। विशेष रूप से हिन्दी और ओड़िया साहित्य के अंतर्संबंधों के अध्ययन में उनका योगदान अत्यंत मूल्यवान सिद्ध होता है।

संदर्भ सूची

1. प्रधान, डॉ.वीणापाणि, ओड़िया साहित्य के नारी कवि (ओड़िया पुस्तक),पृ.सं–118,विजयिनी पब्लिकेशन–(2018),कटक
2. वही,पृ.सं.–118,
3. सं.दास, डॉ.हेमन्त कुमार,कुंतला कुमारी ग्रंथावली(काव्य खंड),कविता–'वरमाला',पृ.सं–393,प्राची साहित्य प्रतिष्ठान (2018),कटक
4. वही,कविता–श्प्यारा हिन्दुस्तानश,पृ.सं.–395
5. चन्द्र,बिपिन, आधुनिक भारत का इतिहास, पृ.सं.–195,ओरियंट ब्लैकस्वान,हैदराबाद, (2008)
6. सं. दास,डॉ.हेमन्त कुमार,कुंतला कुमारी ग्रंथावली (काव्य खंड),कविता–'चरखा–धारी' पृ.सं.–393
7. वही,कविता– 'मंत्र से स्वतंत्रता का गूँजता स्वदेश हो' पृ.सं. –402
8. गाँधी, मोहनदास करमचन्द, हिन्द स्वराज, हिन्दुस्तान की हालत–3,पृ.सं.–48,सस्ता साहित्य मंडल,(1958) (सॉफ्ट कॉपी)
9. सं. दास,डॉ.हेमन्त कुमार,कुंतला कुमारी ग्रंथावली(काव्य खंड),कविता–'तिरंगा झंडा',पृ. सं.395
10. वही,कविता– 'राष्ट्रभाषा',पृ.सं.–396
11. वही,कविता– 'भारतमाता',पृ.सं.–398
12. नेहरु, जवाहरलाल, हिन्दुस्तान की कहानी, पृ.सं.–68,सस्ता साहित्य मंडल,नई दिल्ली, (2020)
13. देवी,सरला,सरला देवी रचनावली(ओड़िया),सं.डॉ. भोलानाथ राउत,पृ.सं.–111, ए.के. मिश्र पब्लिशर्ष,कटक,(2017)
14. सं. दास,डॉ. हेमन्त कुमार,कुंतला कुमारी ग्रंथावली(काव्य खंड),कविता–'भारत–नारी', पृ. सं.–398